Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **13.04.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों को पढ़ने तथा दीन के ज्ञान को बढ़ाने की ओर भी हमें ध्यान करना चाहिए, ख़िलाफ़त के साथ सम्बंध स्थापित करने का भी प्रयास करना चाहिए, अल्लाह तआला ने इसके लिए जो एम टी ए का पुरस्कार दिया है, उसके माध्यम से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए तथा वर्तमान ख़लीफ़ः के समस्त कार्यकर्मों से लाभान्वित होना चाहिए।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- इस ज़माने में हर ओर उपद्रव एवं फ़साद हो रहा है। कहीं दीन के नाम पर फ़साद हो रहा है तो कहीं दुनियावी शक्ति तथा प्रतिष्ठा साबित करने के लिए फ़साद हो रहा है। कहीं निर्धनता तथा इमारात की प्रतिस्पर्धा के कारण फ़साद हो रहा है तो कहीं राजनैतिक पार्टियों के सत्ता में आने के लिए फ़साद उत्पन्न हो गया है। कहीं घरों में छोटी छोटी बातों पर झगड़े और फ़साद हैं तो कहीं एक दूसरे के अधिकारों के हनन के कारण लड़ाई झगड़े और फ़साद हैं। कहीं जातिगत प्रतिष्ठा प्रमाणित करने के लिए फ़साद का प्रयत्न किया जा रहा है तो कहीं अपने अधिकार लेने के लिए अनुचित उपाय धारण करके उपद्रव एवं फ़साद करने का प्रयास किया जा रहा है। अभिप्रायः यह है कि जिस दृष्टि से भी देखें दुनिया उपद्रव एवं फ़साद में घिरी हुई है। न ग़रीब इससे सुरक्षित है, न धनवान इससे सुरक्षित है, न उन्नत राष्ट्र इससे सुरक्षित हैं, न ही कम उन्नत देश अथवा प्रगति शील देश इससे सुरक्षित हैं। मानो कि इंसान जो अपने आपको इस ज़माने में बड़ा उन्नत समझ रहा है या समझता है कि यह ज्ञान, बुद्धि एवं प्रकाश का युग है, वास्तव में अन्धेरों में डूबा हुआ है। ख़ुदा तआला को भूल कर दुनिया की तलाश तथा उसे ही अपना उपास्य और रब्ब समझ कर विनाश के गढ़े की ओर बढ़ रहा है अपितु उसके निकट पहुंच चुका है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मुसलमानों पर आश्चर्य है जिनके पास एक व्यापक एवं सम्पूर्ण किताब अपने मूल रूप में विद्यमान है और फिर ख़ुदा तआला ने अपने वादे के अनुसार इस ज़माने के इमाम को भेजा है जिसने मतभेदों का सुधार करना था, किन्तु बजाए इसके कि मुसलमान ख़ुदा तआला के भेजे हुए इस दूत की बात सुनें तथा इस बात की ओर आएँ, जो मतभेद तथा फ़साद का निवारण करने वाली बात है, मुसलमानों की अधिकांश संख्या दीन के नाम पर फ़साद करने वालों के पीछे चल पड़ी है। अल्लाह तआला ने तो दुनिया के फ़साद को समाप्त करने के लिए और आपस में प्रेम एवं बंधुत्व पैदा करने के लिए तथा ख़ुदा तआला को पहचानने के लिए एक व्यवस्था की थी परन्तु मुसलमान इस ओर ध्यान देने के लिए तय्यार नहीं हैं तथा यही कारण है कि मुस्लिम दुनिया सर्वाधिक फ़सादों में लिप्त है। इनके दीनी तथा सांसारिक मार्ग दर्शक इन्हें अंधेरों में धकेल रहे हैं तथा आपस में एक ही देश के रहने वाले नागरिक एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो रहे हैं और इस बात का लाभ लेते हुए ग़ैर मुस्लिम शक्तियाँ मुसलमानों के गुटों को लड़ाने और अपने स्वार्थ प्राप्त करने के लिए युद्ध की सामग्री भी दे रही हैं तथा सैन्य सहायता भी दे रही हैं। अतः यह एक बड़ी शोकनीय बात है तथा यह स्थिति जहाँ हमें अपने लिए और सामान्य मुसलमानों के लिए दुआओं की ओर ध्यानाकर्षित करने वाली होनी चाहिए वहाँ हमें इस बात की भी आवश्यकता है कि अपनी आध्यात्मिक एवं क्रियात्मक अवस्थाओं को वैसा बनाएँ जैसा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें देखना चाहते हैं, क्यूँकि यदि हमारी अमली हालतें ऐसी नहीं हैं जैसा आप हममें देखना चाहते हैं तो सम्भव है कि हम भी इस गुट में शामिल हो जाएँ जो उपद्रव एवं फ़साद में लिप्त है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निरन्तर और बार बार अपनी जमाअत के लागों को नसीहत फ़रमाई है कि तुम्हारी हालतें बैअत के बाद कैसी होनी चाहिएँ? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ वृत्तांत इस समय पेश करुंगा जो इन बातों की ओर ध्यान दिलाते हैं, इस लिए हमें इनको ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए। यह न समझें कि पहले भी कई बार सुन चुकें हैं या पढ़ चुके हैं। जिस क्रमानुसार तथा जिस प्रकार विभिन्न शैलियों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार बार जमाअत को अपनी हालतों के

सुन्दर करने का अनुग्रह किया है यह इस बात की अभिव्यक्ति है कि अपनी जमाअत की कितनी चिंता थी आपको, कि कहीं वह अपने उद्देश्य को न भूल जाए। कहीं बैअत के बाद फिर इनमें बिगाड़ उत्पन्न न हो जाए, फिर वे अंधेरे की ओर न बढ़ने लगें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हमारी जमाअत के लिए अनिवार्य है कि इस भयावह युग में जबकि हर ओर अनादर, मूर्छता एवं पथभ्रष्टता की हवा चल रही है, तक़्वा धारण करें। दुनिया का यह हाल है कि अल्लाह तआला के आदेशों का सम्मान नहीं, अधिकारों तथा वसीयतों की चिंता नहीं। न यह पता है कि हमारे क्या दायित्व हैं तथा किस प्रकार हमने अदा करने हैं, न उन बातों की चिंता है जिनकी इनको प्रेरणा दी गई थी। संसार तथा इसके कामों में अति व्यस्त हैं। तनिक सी दुनिया की हानि होती देखकर दीन के उस अंश को छोड़ देते हैं तथा अल्लाह तआला के हक़ नष्ट कर देते हैं। स्वार्थ की भावना के साथ एक दूसरे से पेश आते हैं। मानसिक आवेषों के सामने बड़े दुर्बल हो गए हैं। तनिक सी बात हो गई तो मानसिक आवेष के नीचे आ गए। उस समय तक कि ख़ुदा ने इनको दुर्बल रखा हुआ है, गुनाह का साहस नहीं करते किन्तु जब ज़रा दुर्बलता दूर हुई और पाप का अवसर मिला तो तुरन्त उसको कर बैठते हैं। फ़रमाया कि आज इस ज़माने में प्रत्येक स्थान पर देख लो तो यही पता मिलेगा कि मानों सच्चा तक़्वा उठ गया हुआ है और सच्चा ईमान बिल्कुल नहीं है। परन्तु चूंकि ख़ुदा तआला को मंजूर है कि उनके सच्चे तक़्वा तथा ईमान का बीज कदाचित नष्ट न करे। जब देखता है कि अब फ़सल नष्ट होने के निकट है तो और फ़सल पैदा कर देता है। फ़रमाया कि वही नवीनतम क़ुर्आन विद्यमान है, जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा था कि- إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ अर्थात हमने ही इस ज़िक्र को उतारा है तथा हम ही इसकी सुरक्षा करने वाले हैं। फ़रमाया कि बड़ा भाग हदीसों का भी मौजूद है तथा बरकतें भी हैं किन्तु दिलों में ईमान और कर्म कदाचित नहीं हैं। ख़ुदा तआला ने मुझे इस लिए भेजा है कि ये बातें पुनः पैदा हों। ख़ुदा की ख़ुदाई ने कदापि यह पसन्द नहीं किया कि यह मैदान ख़ाली रहे, यदि बुराईयाँ फैल रहीं हैं तो अल्लाह तआला को स्वाभिमान और ख़ुदाई की आवश्यकता थी कि इस क्षेत्र को ऐसे लोगों से भरे अथवा ऐसे लोग पैदा करे जो फिर दीन को दुनिया पर प्रमुखता देने वाले हों, दीन को जारी करने वाले हों, दीन को फैलाने वाले हों, दीन के अनुसार कर्म करने वाले हों तथा इसी लिए हमारी तबलीग़ है कि तक़्वा वाला जीवन प्राप्त हो जावे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यदि वास्तविक बैअत की है तो जीवित लोगों में शामिल होना होगा, रूहानी लोगों में शामिल होना होगा अन्यथा कोई लाभ नहीं। इस्लाम का यथार्थ क्या है तथा उसे हम किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं, इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

इस्लाम अल्लाह तआला के समस्त नियमों के नीचे आ जाने का नाम है तथा इसका सारांश ख़ुदा का सच्चा आज्ञा पालन तथा सम्पूर्ण आज्ञा पालन है। मुसलमान वह है जो अपना पूर्ण अस्तित्व ख़ुदा तआला की सेवा में रख देता है- مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ अर्थात मुसलमान वह है जो अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए आरक्षित कर दे और आस्था एवं कर्मों की दृष्टि से उसका लक्ष्य और उद्देश्य अल्लाह तआला ही की प्रसन्नता तथा ख़ुशनूदी हो तथा समस्त नेकियाँ और सुन्दर कर्म जो उसके द्वारा घटित हों वे कठिनाई पूर्वक तथा कठिन रीति से न हों बल्कि उनमें एक प्रकार के आनन्द तथा स्वाद प्राप्त करने का प्रयास हो। फ़रमाया- सच्चे मुसलमान को यदि कहा जावे कि इन कर्मों के करने में कुछ भी न मिले तब भी अल्लाह तआला से मुहब्बत हो, उसकी इबादत और उसके साथ सम्बंध तथा उसके आज्ञा पालन में लीन हो, किसी बदले अथवा प्रतिफल की भावना तथा आशा पर नहीं है अपितु वह अपने अस्तित्व को, ख़ुदा की दी हुई शक्तियों को जब इस उद्देश्य और लक्ष्य की प्राप्ति में लगाता है तो उसको अपने प्यारे का सुन्दर चेहरा ही दिखाई देता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को भी स्पष्ट किया है कि अल्लाह के आदेशों का सम्पूर्ण आज्ञा पालन करना तथा केवल उसकी प्रसन्नता को प्राप्त करना कोई सरल कार्य नहीं है। यह ऐसी बात है जिसके लिए भरसक प्रयास करना चाहिए तभी अहमदी होने का लक्ष्य भी प्राप्त होगा। अतः आप फ़रमाते हैं-

जो व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से आज्ञा पालन नहीं करता, वह इस सिलसिले को बदनाम करता है। आदेश एक नहीं होता अपितु आदेश तो अनेक हैं। जिस प्रकार जन्नत के कई द्वार हैं कि कोई किसी से दाख़िल होता है और कोई किसी से दाख़िल होता है, इसी प्रकार नर्क के कई द्वार हैं, ऐसा न हो कि तुम एक द्वार तो बन्द करो और दूसरा खुला रखो। फ़रमाया- याद रखो केवल नाम लिखवाने से कोई जमाअत में दाख़िल नहीं होता, आपस में प्रेम करो, अधिकारों का हनन न करो, ख़ुदा की राह में दीवानों की भांति हो जाओ ताकि ख़ुदा तुम पर कृपा करे।

एक अवसर पर जमाअत को तक़्वा के महत्त्व पर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

ख़ुदा ने हमें जिस बात पर नियुक्त किया है वह यही है कि तक़्वा का मैदान ख़ाली पड़ा है। दीन को फैलाना है, दीन की

तबलीग़ करनी है, तर्बियत करनी है तो तक़्वा पहले अपने अन्दर पैदा करना होगा। तक़्वा होगा तो सारे काम धीरे धीरे आरम्भ हो जाएँगे। यदि तुम तक़्वा करने वाले होगे तो सारी दुनिया तुम्हारे साथ होगी। अतः तक़्वा पैदा करो। जो लोग शराब पीते हैं अथवा जिनके धर्म में मदिरा सेवन बड़ा कार्य है उनको तक़्वा से कोई सम्बंध नहीं हो सकता। वे लोग नेकी से युद्ध कर रहे हैं। अतः यदि अल्लाह तआला हमारी जमाअत को ऐसा सौभाग्य दे और इन्हें क्षमता दे कि वे बुराईयों से जंग करने वाले हों तथा तक़्वा और पवित्रता के मैदान में प्रगति करें तो यही बड़ी सफलता है तथा इससे बढ़ कर कोई बात प्रभावकारी नहीं हो सकती। फ़रमाया कि इस समय दुनिया के समस्त धर्मों को, कि मूल उद्देश्य तक़्वा की कमी है तथा दुनिया की प्रतिष्ठाओं को ख़ुदा बना दिया गया है। वास्तविक ख़ुदा छिप गया है तथा सच्चे ख़ुदा का निरादर किया जाता है। किन्तु अब ख़ुदा चाहता है कि वह अपना आप ही माना जावे तथा दुनिया को उसकी पहचान हो। जो लोग दुनिया को ख़ुदा समझते हैं वे अल्लाह पर भरोसा करने वाले नहीं हो सकते। अतः प्रत्येक को अपना निरीक्षण करने की आवश्यकता है कि क्या ख़ुदा तआला का हक़ अदा करने के बजाए हम दुनिया के लाभ प्राप्त करने का तो प्रयास नहीं कर रहे। यदि हक़ ख़ुदा तआला का अदा करना है तो फिर दीन को प्राथमिकता देनी होगी तथा सांसारिक कार्यों को पीछे डालना होगा। अतः हमने यह देखना है कि हम दीन को प्राथमिकता दे रहे हैं अथवा दुनिया हमारे दीन पर छाई जा रही है, तक़्वा में हम बढ़ रहे हैं या तक़्वा की कमी हो रही है। फ़रमाया- सत्यपुरुष का कर्त्तव्य है कि वह दीन को प्राप्त करने में लगा रहे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़ कर कोई सम्पूर्ण मानव संसार में नहीं आया किन्तु आपको भी رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا की दुआ की शिक्षा दी गई थी तो फिर और कौन है जो अपनी मअरिफ़त और ज्ञान पर आश्रित होकर ठहर जावे तथा आगे प्रगति की आवश्यकता न समझे। जैसे जैसे इंसान अपने ज्ञान और विवेक में प्रगति करेगा उसे मालूम होता जावेगा कि अभी बहुत सी बातों का निवारण शेष है।

फ़रमाते हैं कि तुमने बहुत सी व्यर्थ की बातों को छोड़ कर इस सिलसिले को स्वीकार किया है यदि तुम इसके विषय में पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं करोगे तो इससे तुम्हें क्या लाभ हुआ। जैसा कि पहले क़ुर्आन करीम पर मनन और विचार करने की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रेरणा दी थी उसी प्रकार आपकी पुस्तकों को भी पढ़ने तथा दीन का ज्ञान बढ़ाने की ओर हमें ध्यान देना चाहिए तथा ख़िलाफ़त से सम्बंध स्थापित के लिए भी प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला ने इसके लिए जो एम टी ए का पुरस्कार दिया है उसके माध्यम से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए और ख़लीफ़-ए-वक़्त के जो समस्त कार्यक्रम हैं उनसे लाभान्वित होना चाहिए। यह एक अत्यंत विशाल माध्यम है जिससे प्रत्येक अहमदी को लाभ प्राप्त करना चाहिए। आपस में मुहब्बत और प्यार करने तथा एक दूसरे की कठिनाई को समझने तथा एक दूसरे के प्रति कर्त्तव्यों का निर्वाह करने की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

वास्तविकता यह है कि भीतरी रूप से पूरी जमाअत एक स्तर पर नहीं होती। अतः यह नियम होना चाहिए कि दुर्बल भाईयों की सहायता की जावे तथा उनको सशक्त किया जावे। क़ुर्आन शरीफ़ में आया है- وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى अर्थात- नेकी और तक़्वा में एक दूसरे के साथ सहयोग करो। फ़रमाया कि दुर्बल भाईयों का भार उठाओ तथा कर्मों की और ईमान की तथा माल की कमज़ोरियों में भी सहयोगी हो जाओ। फ़रमाया- कोई जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जब तक कमज़ोरों को शक्ति वाले सहारा नहीं देते और उसकी यही रीति है कि उनकी त्रूटियों को छिपाया जावे। सहाबा को यही शिक्षा हुई कि नए मुस्लिमों की कमज़ोरियाँ देखकर न चिड़ो, क्यूँकि तुम भी ऐसे ही कमज़ोर थे। फ़रमाया कि वह जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जो एक दूसरे को खाए और जब चार मिल कर बैठें तो अपने एक ग़रीब भाई की शिकायत करें। बल्कि समूह में चाहिए कि शक्ति आ जाए तथा एकता पैदा हो जाए जिससे मुहब्बत आती है और बरकतें पैदा होती हैं। फ़रमाया कि ज़रा ज़रा सी बात पर ऐसी कठोर पकड़ नहीं होनी चाहिए जो दिल को तोड़ने वाली तथा दुःख का कारण होती हैं।

फिर भाईचारे और सहानुभूति की नसीहत फ़रमाते हुए आप आगे फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत हरी भरी नहीं होगी जब तक वह आपस में सच्ची सहानुभूति न करे। जिसको भी क्षमता दी गई है वह कमज़ोर से मुहब्बत करे। मैं जो यह सुनता हूँ कि कोई किसी का दोष देखता है तो वह उसके साथ शिष्टाचार से पेश नहीं आता अपितु घृणा और विमुखता से पेश आता है, जबकि चाहिए तो यह कि उसके लिए दुआ करे, मुहब्बत करे तथा उसे विनम्रता पूर्वक और शिष्टाचार के साथ समझाए। परन्तु इसके बजाए द्वेष में अधिक हो जाता है। यदि क्षमा न किया जावे, सहानुभूति न की जावे तो इस प्रकार बिगड़ते बिगड़ते परिणाम बुरा होता है। जमाअत तब बनती है कि कुछ लोग अन्य लोगों से हमदर्दी करें और उनके दोष को छिपाएँ। फ़रमाया कि ख़ुदा तआला पर मुझे बहुत बड़ी आशाएँ हैं, उसने वादा किया है कि وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ अर्थात- उन लोगों को जिन्होंने तेरा अनुसरण किया है, उन लोगों पर जिन्होंने तेरा इंकार किया है, क़्यामत तक ऊपर रखूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल विशेषतः पाकिस्तान में अहमदियों को इस बात पर नज़र रखनी चाहिए कि यह जो उनकी प्रस्थितियाँ हैं कमज़ोरी की तथा शासन भी और वैधानिक संस्था भी तथा प्रशासन भी उनके विरुद्ध पहले से बढ़कर षड्यन्त्र कर रहे हैं, इन दिनों में विशेष रूप से अपनी हालतों में बदलाव पैदा करने का प्रयास करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि अब तुममें एक नई बिरादरी और नया बन्धुत्व स्थापित हुआ है, पिछले सम्बंध टूट गए हैं, ख़ुदा तआला ने यह नई क़ौम बनाई है जिसमें धनवान निर्धन, बच्चे जवान बूढ़े हर प्रकार के लोग शामिल हैं। अतः ग़रीबों का कर्त्तव्य है कि वे अपने आदरणीय भाईयों का सम्मान करें और आदर करें और धनवान लोगों का कर्त्तव्य है कि वे निर्धनों की सहायता करें उनको भिखारी और तुच्छ न समझें। फ़रमाया कि किश्ती-ए-नूह का बार बार अध्ययन करो तथा उसके अनुसार अपने आपको बनाओ। قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا अर्थात- निःसन्देह सफल हो गया वह जिसने अपनी आत्मा को पवित्र किया। फ़रमाया- कश्तीय-ए-नूह में मैंने अपनी शिक्षा लिख दी है तथा उससे प्रत्येक व्यक्ति का अवगत होना अनिवार्य है। चाहिए कि प्रत्येक नगर की जमाअत जलसा करके सबको यह सुना दे, इस युक्ति से इसका प्रकाशन भी हो जाएगा तथा एकता जो हम चाहते हैं, जमाअत में पैदा हो जाएगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः जहाँ पढ़ने और सुनाने का जमाअतों में प्रबन्ध होना चाहिए वहाँ एम टी ए पर भी पढ़ने की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक को, उसको अपने जीवन का अंश भी बनाना चाहिए, स्वयं भी पढ़नी चाहिए तथा उसके अनुसार कर्म करने का भी प्रयास होना चाहिए। बुराईयों से बचने की चेतावनी तथा वास्तविक अहमदी की निशानियाँ बयान करते हुए आप फ़रमाते हैं कि तुम्हारा काम अब यह होना चाहिए कि दुआओं और इस्तिग़फ़ार और इबादते इलाही और मन की शुद्धि तथा आत्मा की पवित्रता प्राप्त करने में व्यस्त हो जाओ। इस प्रकार अपने आपको ख़ुदा तआला के वरदानों तथा पुरस्कारों का अधिकारी बनाओ जिनका उसने वादा फ़रमाया है। यद्यपि ख़ुदा तआला के मेरे साथ बड़े बड़े वादे हैं तथा भविष्य वाणियाँ हैं जिनके बारे में विश्वास है कि वे पूरे होंगे परन्तु तुम अकारण ही उनपर गर्व न करो। हर प्रकार के द्वेष, घृणा, शिथिलताओं तथा घोर पापों की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष राहों तथा सुस्ती और मूर्छता से बचो तथा ख़ूब याद रखो कि सुखान्त सदैव मुत्तक़ियों का होता है। जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ इस लिए मुत्तक़ी बनने की चिंता करो, शुभान्त मुत्तक़ियों का ही है।

अल्लाह तआला हमें वास्तविक अहमदी बनने तथा आपकी शिक्षानुसार चलने का सामर्थ्य प्रदान करे। ख़ुदा तआला का हक़ अदा करने वाले भी हों और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने वाले भी हों। अपने कर्मों का सुधार करने वाले भी हों तथा अपने ज्ञान में वृद्धि करने की ओर ध्यान देने वाले भी हों और अल्लाह तआला के हक़ अदा करने वाले भी हों।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इन दिनों में विशेष रूप से पाकिस्तान की स्थिति के विषय में भी दुआ करें तथा पाकिस्तानियों को स्वयं भी अपने लिए बहुत दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला उनको भी प्रत्येक दुर्भावना से सुरक्षित रखे। सामान्य रूप से देश के भीतर भी जो उपद्रव हो रहा है अल्लाह तआला उसके बुरे प्रभाव से देश को सुरक्षित रखे। साधारणतः दुनिया के लिए भी दुआ करें बड़ी तेज़ी से यह अब युद्ध की ओर बढ़ रहे हैं। रूस और अमरीका दोनों तय्यारियों में व्यस्त हैं। वास्तव में तो ये अपना प्रभुत्व चाहते हैं तथा नाम यह कर रहे हैं कि हम निर्बलों के अधिकार दिलवाना चाहते हैं। वास्तव में तो ये दुर्बलों के अधिकार दिलवाने के नाम पर मुसलमान देशों को नष्ट करना चाहते हैं। अतः अल्लाह तआला मुसलामनों को भी बुद्धि प्रदान करे तथा ये उन लोगों से सहायता लेने के बजाए स्वयं अपने निर्णय लेने वाले हों, अपनी जनता के अधिकार देने वाले हों, जनता अपनी सरकार के अधिकार देने वाली हो और ये कट्टर पंथी गिरोह जो इस्लाम के नाम पर विधवंस कर रहे हैं अल्लाह तआला उनकी भी पकड़ करे तथा दोनों पक्षों को बुद्धि और समझ दे और सबसे बढ़कर यह कि ज़माने के इमाम को मानने वाले हों क्यूँकि इसके बिना अब कोई अन्य चारा नहीं कि ये बच सकें अथवा उनकी किसी भी अवस्था में स्थापना शेष रहने वाली है। अल्लाह तआला उनको बुद्धि प्रदान करे तथा मुसलमान इन अत्याचारों का भाग बनने के बजाए इस्लाम की वास्तविक शिक्षानुसार मुहब्बत और प्यार और भाईचारे की शिक्षा को सार्वजनिक करने वाले हों और अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले हों।

TOLL FREE NO: 180030102131